JSL, 7(1), Jan 2022: 19 - 30

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

JOURNAL OF SCIENTIFIC LETTERS
www.jslsci.com

मध्यकालीन भारत में सुल्तान शम्सुद्दीन इल्तुतमिश का ऐतिहासिक अध्ययन

Ram Bujharat Yadav
Research Scholar, Sabarmati University, Ahmedabad, Gujarat
Dr. Sunil Kumar Chaturvedi
Research Supervisor, Sabarmati University, Ahmedabad, Gujarat

सारांश

सुल्तान शम्सुद्दीन इल्तुतमिश दिल्ली सल्तनत के प्रारम्भिक इतिहास में एक अत्यंत महत्वपूर्ण शासक के रूप में प्रतिष्ठित है। उसका शासनकाल उस समय आया जब दिल्ली सल्तनत राजनीतिक अस्थिरता, क्षेत्रीय विद्रोहों और बाहरी चुनौतियों से जूझ रही थी। इल्तुतमिश ने अपनी राजनीतिक दूरदर्शिता, सैन्य क्षमता और प्रशासनिक योग्यता के माध्यम से दिल्ली सल्तनत को एक संगठित एवं स्थायी राजनीतिक शक्ति के रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उसने विभिन्न विद्रोही शक्तियों का दमन किया तथा बंगाल, बिहार, राजपूताना और सिंध जैसे क्षेत्रों में दिल्ली की सत्ता को मजबूत करने का प्रयास किया। मंगोलों से उत्पन्न संभावित खतरे के प्रति उसकी कूटनीतिक नीति भी उसकी राजनीतिक सूझ-बूझ का परिचायक थी। प्रशासन के क्षेत्र में उसने केंद्रीकृत शासन व्यवस्था को सुदृढ़ किया तथा इक्ता व्यवस्था को व्यवस्थित रूप प्रदान किया। चाँदी का टंका और तांबे का जीतल उसके आर्थिक एवं मुद्रा संबंधी सुधारों के महत्वपूर्ण उदाहरण माने जाते हैं। उसने दिल्ली को सल्तनत की प्रभावशाली राजधानी के रूप में विकसित किया और स्थापत्य निर्माण को भी प्रोत्साहित किया। प्रस्तुत अध्ययन में इल्तुतमिश के राजनीतिक जीवन, प्रशासनिक नीतियों, सैन्य अभियानों, आर्थिक व्यवस्था, धार्मिक नीति, स्थापत्य गतिविधियों तथा मध्यकालीन भारतीय इतिहास पर उसके दीर्घकालीन प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

मुख्यशब्द-शम्सुद्दीन इल्तुतमिश, दिल्ली सल्तनत, मध्यकालीन भारत, तुर्क शासन, राजनीतिक इतिहास, प्रशासनिक व्यवस्था, स्थापत्य कला, सांस्कृतिक विकास, केंद्रीय सत्ता, रजिया सुल्तान, सल्तनत का सुदृढ़ीकरण।

E-mail: editor.jslsci888@gmail.com

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

प्रस्तावना

मध्यकालीन भारत का इतिहास राजनीतिक परिवर्तन, सत्ता संघर्ष, क्षेत्रीय राज्यों के उदय तथा नई प्रशासनिक व्यवस्थाओं के विकास से निर्मित एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक कालखंड है। बारहवीं और तेरहवीं शताब्दी के संक्रमणकाल में उत्तर भारत की राजनीतिक संरचना में व्यापक परिवर्तन हुए। इस अवधि में तुर्क शासकों के आगमन और दिल्ली में उनकी राजनीतिक सत्ता की स्थापना ने भारतीय इतिहास की दिशा को प्रभावित किया। मुहम्मद गौरी की मृत्यु के बाद उसके भारतीय क्षेत्रों में सत्ता के उत्तराधिकार को लेकर अनेक संघर्ष उत्पन्न हुए। कुतुबुद्दीन ऐबक ने दिल्ली में स्वतंत्र सत्ता की नींव को आगे बढ़ाया, किंतु उसका शासनकाल अपेक्षाकृत छोटा रहा। उसके पश्चात दिल्ली सल्तनत के सामने सबसे बड़ी चुनौती एक स्थायी और संगठित शासन व्यवस्था स्थापित करने की थी। इसी ऐतिहासिक परिस्थिति में शम्सुद्दीन इल्तुतमिश का उदय हुआ।

शम्सुद्दीन इल्तुतमिश दिल्ली सल्तनत के प्रारम्भिक तुर्क शासकों में सर्वाधिक प्रभावशाली शासकों में गिना जाता है। उसका शासनकाल लगभग 1211 से 1236 ई. तक रहा। यद्यपि उसे सत्ता प्राप्त करने के लिए अनेक राजनीतिक चुनौतियों का सामना करना पड़ा, फिर भी उसने अपनी योग्यता और राजनीतिक दूरदर्शिता के माध्यम से दिल्ली की सत्ता को स्थायित्व प्रदान किया। उसके सामने केवल बाहरी शत्रुओं का प्रश्न नहीं था, बल्कि दिल्ली सल्तनत के भीतर भी अनेक ऐसे सरदार और शासक थे जो स्वतंत्र सत्ता स्थापित करना चाहते थे। इसलिए इल्तुतमिश का शासन केवल विजय अभियानों का इतिहास नहीं है, बल्कि यह राजनीतिक एकीकरण, प्रशासनिक संगठन और सत्ता के केंद्रीकरण की प्रक्रिया का भी महत्वपूर्ण चरण है।

इल्तुतमिश का प्रारम्भिक जीवन संघर्षपूर्ण रहा। वह मध्य एशिया के इल्बरी तुर्क परिवार से संबंधित था और परिस्थितियों के कारण दास के रूप में बेचा गया। बाद में वह कुतुबुद्दीन ऐबक के संपर्क में आया और अपनी योग्यता, सैन्य क्षमता तथा प्रशासनिक प्रतिभा के कारण उच्च पदों तक पहुँचा। ऐबक ने उसे महत्वपूर्ण प्रशासनिक जिम्मेदारियाँ प्रदान कीं और अंततः वह दिल्ली की राजनीति में प्रभावशाली व्यक्तित्व बन गया। ऐबक की मृत्यु के बाद उत्पन्न राजनीतिक अस्थिरता में इल्तुतमिश ने धीरे-धीरे अपनी स्थिति मजबूत की और दिल्ली के सिंहासन पर अधिकार स्थापित किया।

इल्तुतमिश के सामने प्रारम्भिक चुनौती दिल्ली सल्तनत के विभिन्न क्षेत्रों पर प्रभावी नियंत्रण स्थापित करने की थी। ऐबक की मृत्यु के बाद पंजाब और सिंध क्षेत्र में विभिन्न शक्तियाँ सक्रिय थीं। यल्दौज और कुबाचा जैसे प्रतिद्वंद्वियों के कारण दिल्ली की सत्ता के लिए गंभीर चुनौती उत्पन्न हुई। इल्तुतमिश ने सैन्य एवं राजनीतिक रणनीति के माध्यम से इन विरोधियों को नियंत्रित किया। इस प्रकार उसने दिल्ली को केवल एक क्षेत्रीय सत्ता के रूप में नहीं रहने दिया, बल्कि उसे उत्तर भारत की प्रमुख राजनीतिक

E-mail: editor.jslsci888@gmail.com

शक्ति के रूप में विकसित करने की दिशा में कार्य किया।उसकी राजनीतिक नीति का एक महत्वपूर्ण पक्ष क्षेत्रीय विद्रोहों और स्वतंत्र शक्तियों का दमन था। बंगाल और बिहार में दिल्ली की सत्ता कमजोर हो रही थी। इल्तुतमिश ने वहाँ अपने प्रभाव को पुनः स्थापित करने के लिए अभियान चलाए। इसी प्रकार राजपूताना के कुछ क्षेत्रों में भी उसने अपनी राजनीतिक स्थिति को मजबूत करने का प्रयास किया। इन अभियानों का उद्देश्य केवल क्षेत्रीय विस्तार नहीं था, बल्कि दिल्ली सल्तनत की राजनीतिक प्रतिष्ठा और केंद्रीय सत्ता को सुदृढ़ करना भी था।इल्तुतमिश के शासनकाल की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि उसकी प्रशासनिक व्यवस्था का संगठन थी। उसने केंद्रीय सत्ता को मजबूत करने के लिए योग्य अधिकारियों और सैन्य सरदारों का उपयोग किया। इक्ता व्यवस्था को व्यवस्थित करने में उसकी भूमिका महत्वपूर्ण मानी जाती है। इक्ताओं के माध्यम से प्रशासनिक अधिकारियों तथा सैनिकों को राजस्व प्राप्ति से संबंधित अधिकार दिए जाते थे। इससे शासन संचालन तथा सैन्य व्यवस्था के बीच समन्वय स्थापित करने में सहायता मिली। हालांकि इस व्यवस्था में स्थानीय शक्तियों के प्रभाव की संभावना भी बनी रहती थी, फिर भी इल्तुतमिश ने केंद्रीय नियंत्रण बनाए रखने का प्रयास किया।उसके शासनकाल में मुद्रा व्यवस्था में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। चाँदी के टंके और तांबे के जीतल को व्यवस्थित रूप में प्रचलित करना उसकी आर्थिक नीति की प्रमुख उपलब्धियों में माना जाता है। एक सुव्यवस्थित मुद्रा प्रणाली ने व्यापार, कर-संग्रह और प्रशासनिक गतिविधियों को अधिक संगठित करने में योगदान दिया। इस प्रकार इल्तुतमिश ने राजनीतिक स्थिरता के साथ-साथ आर्थिक प्रशासन को भी मजबूत आधार प्रदान किया।

इल्तुतमिश की कूटनीतिक नीति भी विशेष उल्लेखनीय थी। उसके शासनकाल में मध्य एशिया की राजनीतिक परिस्थितियाँ तेजी से बदल रही थीं और चंगेज खान के नेतृत्व में मंगोल शक्ति का विस्तार हो रहा था। इल्तुतमिश ने इस परिस्थिति में अत्यंत सावधानी से नीति अपनाई। उसने ऐसे निर्णयों से बचने का प्रयास किया जिनसे दिल्ली सल्तनत सीधे मंगोल संघर्ष में उलझ जाती। उसकी कूटनीतिक समझ ने दिल्ली सल्तनत को तत्कालीन मध्य एशियाई राजनीतिक संकट से अपेक्षाकृत सुरक्षित रखने में सहायता की।धार्मिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से भी इल्तुतमिश का शासन महत्वपूर्ण था। उसने इस्लामी विद्वानों और धार्मिक संस्थाओं को संरक्षण दिया तथा दिल्ली को इस्लामी संस्कृति के एक प्रमुख केंद्र के रूप में विकसित करने में योगदान दिया। साथ ही उसके शासनकाल में स्थापत्य गतिविधियों को भी प्रोत्साहन मिला। कुतुब मीनार के निर्माण को पूरा कराने तथा अन्य निर्माण कार्यों के माध्यम से उसने दिल्ली की स्थापत्य परंपरा के विकास में योगदान दिया। उसके समय की स्थापत्य शैली में मध्य एशियाई और भारतीय परंपराओं का संपर्क दिखाई देता है।

इल्तुतमिश की सबसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक उपलब्धि दिल्ली सल्तनत को स्थायित्व प्रदान करना थी।

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

उसके पूर्व सल्तनत की स्थिति काफी हद तक राजनीतिक संघर्षों और व्यक्तिगत सैन्य शक्ति पर निर्भर थी। इल्तुतमिश ने इसे एक अधिक संगठित राज्य व्यवस्था का रूप देने का प्रयास किया। उसने सत्ता के उत्तराधिकार के प्रश्न पर भी अपनी पुत्री रजिया को योग्य उत्तराधिकारी के रूप में देखा। यद्यपि उसके बाद उत्तराधिकार का संघर्ष उत्पन्न हुआ, फिर भी रजिया का दिल्ली की सुल्तान के रूप में उभरना मध्यकालीन भारतीय इतिहास की महत्वपूर्ण घटना बनी।

शम्सुद्दीन इल्तुतमिश का प्रारम्भिक जीवन एवं सत्तारोहण

शम्सुद्दीन इल्तुतमिश का प्रारम्भिक जीवन संघर्षों और उतार-चढ़ाव से भरा हुआ था। वह तुर्क मूल के इल्बरी वंश से संबंधित था। उसका जन्म मध्य एशिया के क्षेत्र में हुआ माना जाता है। प्रारम्भिक अवस्था में ही पारिवारिक परिस्थितियों के कारण उसे दास के रूप में बेच दिया गया। उस समय मध्य एशिया में दास व्यापार व्यापक था और योग्य तथा प्रतिभाशाली युवकों को विभिन्न शासकों एवं सामंतों के हाथों बेचा जाता था। इल्तुतमिश भी इसी व्यवस्था का हिस्सा बना, किंतु उसकी प्रतिभा और योग्यता ने उसे सामान्य दास के जीवन तक सीमित नहीं रहने दिया।

इल्तुतमिश को विभिन्न व्यक्तियों के हाथों से गुजरने के बाद अंततः कुतुबुद्दीन ऐबक ने खरीदा। ऐबक स्वयं मुहम्मद गौरी का प्रमुख दास एवं सेनापति था और बाद में भारत में स्वतंत्र सत्ता स्थापित करने में सफल हुआ। ऐबक ने इल्तुतमिश की प्रतिभा को पहचाना और उसे महत्वपूर्ण प्रशासनिक तथा सैन्य जिम्मेदारियाँ प्रदान कीं। इल्तुतमिश ने अपनी योग्यता, साहस, अनुशासन और निष्ठा के माध्यम से शीघ्र ही ऐबक का विश्वास प्राप्त कर लिया। उसकी कार्यकुशलता के कारण उसे महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्त किया गया तथा बाद में उसे बदायूँ का प्रशासन सौंपा गया। बदायूँ का शासन उसके राजनीतिक जीवन में एक महत्वपूर्ण चरण सिद्ध हुआ।

इल्तुतमिश ने प्रशासनिक कार्यों के साथ-साथ सैन्य अभियानों में भी अपनी क्षमता का परिचय दिया। उसने विभिन्न क्षेत्रों में विद्रोहों को नियंत्रित करने तथा राजनीतिक व्यवस्था को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उसकी योग्यता से प्रभावित होकर कुतुबुद्दीन ऐबक ने अपनी पुत्री का विवाह भी इल्तुतमिश से किया। इस वैवाहिक संबंध ने इल्तुतमिश की राजनीतिक स्थिति को और अधिक मजबूत किया। इस प्रकार वह केवल एक सैन्य अधिकारी नहीं रहा, बल्कि दिल्ली की सत्ता से निकटता रखने वाला प्रभावशाली राजनीतिक व्यक्ति बन गया।

1210 ई. में कुतुबुद्दीन ऐबक की आकस्मिक मृत्यु के बाद दिल्ली की राजनीतिक स्थिति अस्थिर हो गई। ऐबक के उत्तराधिकारी के रूप में आराम शाह को सत्ता प्राप्त हुई, किंतु उसकी योग्यता और राजनीतिक प्रभाव सीमित था। दिल्ली के प्रभावशाली तुर्क अमीरों का एक वर्ग आराम शाह से संतुष्ट नहीं था। ऐसी परिस्थिति में इल्तुतमिश को दिल्ली की सत्ता के लिए उपयुक्त व्यक्ति माना गया। उसे

E-mail: editor.jslsci888@gmail.com

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

दिल्ली आमंत्रित किया गया और उसने आराम शाह के विरुद्ध संघर्ष किया। अंततः 1211 ई. में इल्तुतमिश ने आराम शाह को पराजित कर दिल्ली के सिंहासन पर अधिकार कर लिया।इल्तुतमिश का सत्तारोहण सरल या निर्विरोध नहीं था। दिल्ली सल्तनत के विभिन्न क्षेत्रों में ऐसे अनेक शक्तिशाली सरदार और शासक थे जो स्वतंत्र सत्ता स्थापित करना चाहते थे। पंजाब क्षेत्र में ताजुद्दीन यल्दौज एक महत्वपूर्ण प्रतिद्वंद्वी था, जबकि सिंध और मुल्तान के क्षेत्र में नासिरुद्दीन कुबाचा का प्रभाव था। इन शक्तियों के अतिरिक्त बंगाल में भी दिल्ली की केंद्रीय सत्ता कमजोर हो रही थी। इसलिए सिंहासन प्राप्त करने के बाद इल्तुतमिश के सामने सबसे बड़ी चुनौती अपने शासन को वैध एवं स्थायी बनाना तथा दिल्ली सल्तनत के विभिन्न भागों पर केंद्रीय नियंत्रण स्थापित करना था।

इल्तुतमिश ने इन चुनौतियों का सामना सैन्य शक्ति और राजनीतिक कूटनीति दोनों के माध्यम से किया। उसने यल्दौज को पराजित कर पंजाब क्षेत्र में अपनी स्थिति मजबूत की और कुबाचा के प्रभाव को भी सीमित करने का प्रयास किया। इसके साथ ही उसने दिल्ली के प्रभावशाली तुर्क अमीरों को अपने पक्ष में संगठित किया। धीरे-धीरे उसने अपनी सत्ता को स्वीकार करवाया और दिल्ली सल्तनत को एक अधिक संगठित राजनीतिक इकाई में बदलने की दिशा में कदम उठाया।

इस प्रकार शम्सुद्दीन इल्तुतमिश का प्रारम्भिक जीवन दासता से सत्ता के शिखर तक पहुँचने की असाधारण यात्रा का उदाहरण है। उसकी प्रतिभा, सैन्य क्षमता, प्रशासनिक दक्षता और राजनीतिक दूरदर्शिता ने उसे दिल्ली सल्तनत का प्रमुख शासक बनाया। उसका सत्तारोहण केवल व्यक्तिगत सफलता नहीं था, बल्कि यह दिल्ली सल्तनत के सुदृढ़ीकरण की शुरुआत भी सिद्ध हुआ। आगे चलकर उसने जिस प्रकार केंद्रीय सत्ता, प्रशासन और राजनीतिक व्यवस्था को मजबूत किया, उसने उसे दिल्ली सल्तनत के प्रारम्भिक इतिहास का सबसे प्रभावशाली शासक बना दिया।

इल्तुतमिश की राजनीतिक एवं सैन्य उपलब्धियाँ

शम्सुद्दीन इल्तुतमिश का शासनकाल दिल्ली सल्तनत के इतिहास में राजनीतिक स्थिरता और सैन्य संगठन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। जब उसने 1211 ई. में दिल्ली की सत्ता संभाली, उस समय सल्तनत अनेक आंतरिक और बाहरी चुनौतियों से घिरी हुई थी। विभिन्न प्रांतीय शासक और तुर्क अमीर स्वतंत्र होने का प्रयास कर रहे थे। ऐसी परिस्थितियों में इल्तुतमिश ने अपनी सैन्य क्षमता, राजनीतिक दूरदर्शिता और कूटनीतिक कौशल के माध्यम से दिल्ली की केंद्रीय सत्ता को मजबूत किया।

सत्ता प्राप्त करने के बाद इल्तुतमिश के सामने सबसे बड़ी चुनौती उसके प्रतिद्वंद्वियों का सामना करना था। पंजाब में ताजुद्दीन यल्दौज दिल्ली की सत्ता के लिए गंभीर चुनौती बना हुआ था। यल्दौज स्वयं को मुहम्मद गौरी की भारतीय सत्ता का उत्तराधिकारी मानता था। इल्तुतमिश ने उसके विरुद्ध सैन्य

E-mail: editor.jslsci888@gmail.com

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

अभियान चलाया और 1216 ई. के आसपास तराइन के युद्ध में उसे पराजित किया। इस विजय से दिल्ली सल्तनत की राजनीतिक स्थिति मजबूत हुई और इल्तुतमिश की प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई। इसके बाद दिल्ली पर उसका नियंत्रण अधिक प्रभावशाली हो गया।

सिंध और मुल्तान के क्षेत्र में नासिरुद्दीन कुबाचा एक शक्तिशाली प्रतिद्वंद्वी था। वह दिल्ली की केंद्रीय सत्ता से स्वतंत्र रहना चाहता था। इल्तुतमिश ने तत्काल उसके विरुद्ध निर्णायक संघर्ष करने के बजाय परिस्थितियों के अनुसार नीति अपनाई। बाद में 1220 के दशक में उसने कुबाचा के विरुद्ध अभियान चलाया और उसके प्रभाव को समाप्त करने में सफलता प्राप्त की। इस प्रकार सिंध और मुल्तान के क्षेत्रों में दिल्ली सल्तनत का प्रभाव बढ़ा।

बंगाल और बिहार में भी दिल्ली की सत्ता कमजोर थी। वहाँ स्थानीय शासक समय-समय पर स्वतंत्रता की घोषणा करते थे। इल्तुतमिश ने इन क्षेत्रों में कई सैन्य अभियान किए और दिल्ली की सर्वोच्चता को पुनः स्थापित किया। बंगाल में उसकी नीति का उद्देश्य वहाँ के विद्रोही शासकों को नियंत्रित करना तथा पूर्वी भारत को दिल्ली सल्तनत की राजनीतिक व्यवस्था से जोड़ना था। इससे सल्तनत का क्षेत्रीय विस्तार हुआ और उसकी केंद्रीय सत्ता को अधिक व्यापक आधार मिला।

इल्तुतमिश ने राजपूताना के क्षेत्रों में भी सैन्य अभियान चलाए। रणथंभौर, जालौर, अजमेर तथा अन्य क्षेत्रों में उसकी शक्ति का प्रभाव स्थापित करने के प्रयास किए गए। यद्यपि इन अभियानों के परिणाम हर स्थान पर समान नहीं रहे, फिर भी उन्होंने दिल्ली सल्तनत के राजनीतिक प्रभाव को बढ़ाने में योगदान दिया। उसने यह समझ लिया था कि केवल राजधानी पर नियंत्रण रखना पर्याप्त नहीं है; सल्तनत की स्थिरता के लिए विभिन्न क्षेत्रों के शक्तिशाली शासकों को नियंत्रित करना आवश्यक था।

इल्तुतमिश की राजनीतिक उपलब्धियों में सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि दिल्ली सल्तनत को एक संगठित राज्य का रूप प्रदान करना थी। उसके पूर्व तुर्क सत्ता मुख्य रूप से सैन्य विजय और व्यक्तिगत निष्ठा पर आधारित थी। इल्तुतमिश ने केंद्रीय सत्ता को मजबूत किया और शक्तिशाली अमीरों के बीच संतुलन बनाए रखने का प्रयास किया। उसने अपने विश्वसनीय तुर्क अधिकारियों और सैन्य सरदारों को प्रशासनिक जिम्मेदारियाँ दीं। बाद में इन्हीं प्रभावशाली तुर्क अमीरों के समूह को इतिहास में**चहलगानी या चालीसा**के नाम से जाना गया।

उसकी राजनीतिक सफलता का एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष उसकी कूटनीतिक नीति थी। तेरहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में मध्य एशिया में चंगेज खान के नेतृत्व में मंगोल शक्ति तेजी से बढ़ रही थी। मंगोलों की शक्ति ने मध्य एशिया और पश्चिमी एशिया की राजनीतिक व्यवस्था को प्रभावित किया। इल्तुतमिश ने इस संकट में अत्यंत सावधानीपूर्ण नीति अपनाई। उसने ऐसे कदमों से बचने का प्रयास किया जिनसे दिल्ली सल्तनत सीधे मंगोल संघर्ष में फँस सकती थी। उसकी व्यावहारिक कूटनीति ने दिल्ली सल्तनत

E-mail: editor.jslsci888@gmail.com

को तत्कालीन अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक संकट से बचाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इल्तुतमिश की सैन्य उपलब्धियों का संबंध केवल विजय अभियानों से नहीं था। उसने सेना और प्रशासन के बीच समन्वय स्थापित करने पर भी ध्यान दिया। इक्ता व्यवस्था के माध्यम से सैन्य अधिकारियों और प्रशासनिक अधिकारियों को राजस्व प्राप्ति से संबंधित अधिकार दिए गए। इससे सेना के रखरखाव और प्रशासनिक व्यवस्था को आर्थिक आधार मिला। इस व्यवस्था ने आगे चलकर दिल्ली सल्तनत की सैन्य-प्रशासनिक संरचना को मजबूत करने में योगदान दिया।

इल्तुतमिश की राजनीतिक वैधता भी धीरे-धीरे मजबूत हुई। उसे अब्बासी खलीफा से मान्यता प्राप्त हुई, जिससे दिल्ली सल्तनत के शासक के रूप में उसकी प्रतिष्ठा को व्यापक वैधता मिली। 1229 ई. में अब्बासी खलीफा से प्राप्त मान्यता ने उसकी स्थिति को मजबूत किया और उसे भारत में स्वतंत्र मुस्लिम शासक के रूप में प्रतिष्ठित किया। यह घटना उसके शासन की राजनीतिक सफलता का महत्वपूर्ण प्रमाण थी।

इल्तुतमिश की प्रशासनिक एवं आर्थिक व्यवस्था

शम्सुद्दीन इल्तुतमिश का शासनकाल दिल्ली सल्तनत की प्रशासनिक एवं आर्थिक व्यवस्था के विकास की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। जब उसने 1211 ई. में दिल्ली की सत्ता संभाली, उस समय सल्तनत का राजनीतिक संगठन अभी पूर्ण रूप से विकसित नहीं हुआ था। विभिन्न क्षेत्रों में स्थानीय शासकों और सामंतों का प्रभाव था तथा केंद्रीय सत्ता को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा था। इल्तुतमिश ने अपनी प्रशासनिक कुशलता के माध्यम से शासन व्यवस्था को अधिक संगठित और केंद्रीकृत बनाने का प्रयास किया। उसकी नीतियों ने आगे चलकर दिल्ली सल्तनत की प्रशासनिक संरचना के विकास के लिए आधार तैयार किया।

इल्तुतमिश की प्रशासनिक व्यवस्था का मुख्य आधारकेंद्रीय सत्ता का सुदृढ़ीकरणथा। सुल्तान राज्य का सर्वोच्च अधिकारी था और सैन्य, न्यायिक, प्रशासनिक तथा राजस्व संबंधी प्रमुख शक्तियाँ उसके पास केंद्रित थीं। शासन संचालन में सहायता के लिए विभिन्न अधिकारियों की नियुक्ति की जाती थी। वजीर वित्त और राजस्व संबंधी कार्यों की देखरेख करता था, जबकि अन्य अधिकारी सैन्य, न्याय और प्रशासन के अलग-अलग क्षेत्रों का संचालन करते थे। इल्तुतमिश ने योग्य एवं विश्वसनीय अधिकारियों को महत्वपूर्ण पद प्रदान किए और उनके माध्यम से केंद्रीय शासन को प्रभावी बनाया।

उसकी प्रशासनिक व्यवस्था मेंइक्ता प्रणालीका विशेष महत्व था। इक्ता किसी अधिकारी या सैन्य सरदार को दिया गया ऐसा राजस्व क्षेत्र था, जिससे वह राज्य की ओर से राजस्व प्राप्त करता और उसके बदले प्रशासनिक तथा सैन्य दायित्वों का निर्वहन करता था। इल्तुतमिश ने इस व्यवस्था को अधिक व्यवस्थित स्वरूप प्रदान किया। इक्तादारों को उनके क्षेत्रों से प्राप्त राजस्व के आधार पर

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

सैनिकों का रखरखाव करना पड़ता था और केंद्रीय सत्ता के प्रति निष्ठा बनाए रखनी होती थी। इससे राज्य को विशाल सेना के संचालन में सहायता मिली तथा दूर-दराज के क्षेत्रों पर केंद्रीय नियंत्रण स्थापित करने का साधन प्राप्त हुआ। हालांकि इक्ता व्यवस्था में स्थानीय अधिकारियों के अत्यधिक शक्तिशाली होने की संभावना थी, इसलिए सुल्तान उनके ऊपर नियंत्रण बनाए रखने का प्रयास करता था।

इल्तुतमिश नेतुर्क अमीरों के संगठनको भी प्रशासनिक व्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान दिया। उसके शासनकाल में प्रभावशाली तुर्क अधिकारियों का एक समूह विकसित हुआ, जिसे बाद के इतिहास मेंचहलगानी या चालीसाके नाम से जाना गया। इन अमीरों को प्रशासन और सैन्य व्यवस्था में महत्वपूर्ण जिम्मेदारियाँ दी गईं। प्रारम्भ में इस समूह ने केंद्रीय शासन को स्थिरता प्रदान करने में सहायता की, यद्यपि बाद में यही शक्तिशाली अमीर उत्तराधिकार की राजनीति में प्रभावशाली बन गए।

न्याय व्यवस्था के क्षेत्र में भी इल्तुतमिश ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सुल्तान सर्वोच्च न्यायिक अधिकारी माना जाता था। विभिन्न स्तरों पर काजियों की नियुक्ति की जाती थी, जो न्यायिक मामलों का निपटारा करते थे। इस्लामी कानून के साथ-साथ स्थानीय परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए प्रशासन चलाया जाता था। न्याय व्यवस्था का उद्देश्य राज्य में कानून-व्यवस्था बनाए रखना तथा सुल्तान की सत्ता को वैधानिक आधार प्रदान करना था।

इल्तुतमिश कीआर्थिक व्यवस्थाका महत्वपूर्ण आधार कृषि और भूमि से प्राप्त राजस्व था। मध्यकालीन अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि पर निर्भर थी। किसानों से भूमि की उपज के आधार पर कर वसूला जाता था और यही राजस्व राज्य के प्रशासन तथा सेना के संचालन का प्रमुख साधन था। इक्ता प्रणाली के माध्यम से राजस्व संग्रह की व्यवस्था को प्रशासनिक ढाँचे से जोड़ा गया। इससे राज्य को अपने विशाल क्षेत्र में आर्थिक संसाधनों का उपयोग करने में सुविधा हुई।

इल्तुतमिश के आर्थिक योगदानों मेंमुद्रा व्यवस्था का विकासविशेष रूप से उल्लेखनीय है। उसके शासनकाल में चाँदी केटंकाऔर तांबे केजीटलको व्यवस्थित रूप से प्रचलित किया गया। चाँदी का टंका दिल्ली सल्तनत की महत्वपूर्ण मानक मुद्रा बना। एक सुव्यवस्थित मुद्रा प्रणाली ने व्यापार, कर-संग्रह और प्रशासनिक लेन-देन को अधिक व्यवस्थित करने में सहायता की। मुद्रा की स्थिरता ने दिल्ली सल्तनत की आर्थिक एवं राजनीतिक प्रतिष्ठा को भी मजबूत किया।

इल्तुतमिश ने व्यापारिक गतिविधियों के विकास के लिए भी अनुकूल वातावरण बनाने का प्रयास किया। दिल्ली सल्तनत के विस्तार के साथ विभिन्न क्षेत्रों के बीच आर्थिक संपर्क बढ़ा। दिल्ली का संपर्क उत्तर भारत के विभिन्न व्यापारिक मार्गों से था। कृषि उत्पादन, वस्तु-विनिमय तथा लंबी दूरी के व्यापार से राज्य को आर्थिक लाभ प्राप्त होता था। सुरक्षित राजनीतिक वातावरण ने व्यापारियों और कारीगरों की

E-mail: *editor.jslsci888@gmail.com*

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

गतिविधियों को बढ़ावा देने में योगदान दिया।

उसकी आर्थिक व्यवस्था का एक अन्य महत्वपूर्ण पक्षराजस्व प्रशासन और सैन्य व्यवस्था के बीच संबंधथा। दिल्ली सल्तनत की शक्ति काफी हद तक उसकी सेना पर निर्भर थी। सेना के लिए नियमित आर्थिक संसाधनों की आवश्यकता थी। इक्ता व्यवस्था के माध्यम से सैन्य अधिकारियों को राजस्व प्राप्ति का अधिकार देकर सैनिक व्यवस्था को बनाए रखने का प्रयास किया गया। इस प्रकार आर्थिक प्रशासन और सैन्य प्रशासन एक-दूसरे से जुड़े हुए थे।

इल्तुतमिश ने प्रशासनिक व्यवस्था मेंकेंद्रीय नियंत्रण और स्थानीय प्रशासन के बीच संतुलनस्थापित करने का प्रयास किया। दूरस्थ क्षेत्रों में नियुक्त अधिकारियों को पर्याप्त अधिकार दिए गए, लेकिन उनकी अंतिम जवाबदेही सुल्तान के प्रति रहती थी। विद्रोह की स्थिति में सुल्तान सैन्य कार्रवाई के माध्यम से केंद्रीय सत्ता को पुनः स्थापित करता था। इस व्यवस्था ने विशाल क्षेत्र में शासन संचालन को संभव बनाया।

इल्तुतमिश की कूटनीति, धार्मिक नीति एवं सांस्कृतिक योगदान

शम्सुद्दीन इल्तुतमिश के शासनकाल में दिल्ली सल्तनत ने केवल राजनीतिक और सैन्य क्षेत्र में ही प्रगति नहीं की, बल्कि कूटनीति, धार्मिक नीति तथा सांस्कृतिक विकास के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन देखे गए। इल्तुतमिश एक व्यावहारिक और दूरदर्शी शासक था। उसके सामने ऐसी राजनीतिक परिस्थितियाँ थीं जिनमें एक ओर दिल्ली सल्तनत के भीतर विभिन्न तुर्क अमीर और क्षेत्रीय शासक चुनौती प्रस्तुत कर रहे थे, वहीं दूसरी ओर मध्य एशिया में मंगोल शक्ति का तेजी से विस्तार हो रहा था। ऐसी परिस्थितियों में उसकी कूटनीतिक नीतियों का उद्देश्य सल्तनत की सुरक्षा, राजनीतिक प्रतिष्ठा और केंद्रीय सत्ता को मजबूत करना था।

1. इल्तुतमिश की कूटनीति

इल्तुतमिश की कूटनीति का सबसे महत्वपूर्ण उदाहरण मंगोलों के प्रति उसकी नीति में दिखाई देता है। तेरहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में चंगेज खान के नेतृत्व में मंगोल साम्राज्य का विस्तार मध्य एशिया तक हो चुका था। इस विस्तार के कारण अनेक मध्य एशियाई शासक और राजकुमार भारत की ओर आने लगे। ख्वारिज्म के शासक जलालुद्दीन मंगबर्नी ने मंगोलों से संघर्ष के बाद भारत की ओर रुख किया और इल्तुतमिश से सहायता की अपेक्षा की। इल्तुतमिश ने इस परिस्थिति में अत्यंत सावधानी बरती। उसने जलालुद्दीन का खुलकर समर्थन करने से परहेज किया, क्योंकि ऐसा करना शक्तिशाली मंगोलों को दिल्ली सल्तनत के विरुद्ध सक्रिय कर सकता था। इस प्रकार उसने तत्कालीन अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों का आकलन करते हुए व्यावहारिक नीति अपनाई।

इल्तुतमिश ने अपने पड़ोसी और प्रतिद्वंद्वी शासकों के साथ भी परिस्थितिनुसार कूटनीतिक संबंध

E-mail: editor.jslsci888@gmail.com

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

बनाए। वह केवल सैन्य शक्ति पर निर्भर नहीं था, बल्कि आवश्यकता पड़ने पर समझौते और राजनीतिक रणनीति का भी उपयोग करता था। यल्दौज और कुबाचा जैसी शक्तियों को नियंत्रित करने के लिए उसने सैन्य कार्रवाई के साथ-साथ राजनीतिक परिस्थितियों का लाभ उठाया। उसकी कूटनीति का मूल उद्देश्य दिल्ली सल्तनत के अस्तित्व और केंद्रीय सत्ता को सुरक्षित रखना था।

इल्तुतमिश की कूटनीतिक सफलता का एक महत्वपूर्ण प्रमाण उसेअब्बासी खलीफा से प्राप्त मान्यताथी। 1229 ई. में अब्बासी खलीफा से उसे औपचारिक मान्यता प्राप्त हुई। इससे उसकी राजनीतिक प्रतिष्ठा बढ़ी और दिल्ली के सुल्तान के रूप में उसकी वैधता को अंतरराष्ट्रीय इस्लामी जगत में स्वीकार्यता मिली। यह मान्यता दिल्ली सल्तनत की स्वतंत्र राजनीतिक स्थिति के लिए भी महत्वपूर्ण थी। इस प्रकार इल्तुतमिश ने आंतरिक सैन्य शक्ति के साथ बाहरी राजनीतिक वैधता प्राप्त करने की दिशा में भी सफलता हासिल की।

2. इल्तुतमिश की धार्मिक नीति

इल्तुतमिश व्यक्तिगत रूप से इस्लाम धर्म का अनुयायी था और उसने अपने शासन में इस्लामी धार्मिक संस्थाओं एवं विद्वानों को संरक्षण दिया। उसके शासनकाल में दिल्ली इस्लामी शिक्षा और धार्मिक गतिविधियों का महत्वपूर्ण केंद्र बनने लगी। विभिन्न विद्वानों, उलेमाओं और धार्मिक व्यक्तियों को राज्य की ओर से संरक्षण प्राप्त हुआ। इससे दिल्ली में इस्लामी बौद्धिक एवं सांस्कृतिक वातावरण के विकास को प्रोत्साहन मिला।

उसकी धार्मिक नीति का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह था कि उसने शासन की स्थिरता के लिए धार्मिक प्रतिष्ठानों और विद्वानों के सहयोग को महत्व दिया। मस्जिदों, मदरसों और धार्मिक संस्थाओं के विकास से इस्लामी संस्कृति के प्रसार में सहायता मिली। हालांकि मध्यकालीन शासकों की धार्मिक नीतियों को आधुनिक धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण से समझना उचित नहीं है, क्योंकि उस समय राज्य और धर्म के संबंध वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था से अलग थे।

इल्तुतमिश ने प्रशासन में मुस्लिम अमीरों और अधिकारियों को महत्वपूर्ण स्थान दिया, किंतु भारतीय समाज की जटिल परिस्थितियों को देखते हुए उसे स्थानीय शक्तियों और गैर-मुस्लिम जनता के साथ भी व्यावहारिक संबंध बनाए रखने पड़े। उसकी प्राथमिकता राजनीतिक स्थिरता और राजस्व व्यवस्था को बनाए रखना थी। इसलिए उसकी धार्मिक नीति में धार्मिक संरक्षण के साथ राजनीतिक व्यावहारिकता का भी समावेश दिखाई देता है।

3. सांस्कृतिक योगदान

इल्तुतमिश के शासनकाल में दिल्ली का सांस्कृतिक विकास उल्लेखनीय रूप से आगे बढ़ा। उसके समय में मध्य एशिया, फारस और अन्य क्षेत्रों से अनेक विद्वान, साहित्यकार, धार्मिक विद्वान तथा

E-mail: editor.jslsci888@gmail.com

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

कलाकार भारत आए। राजनीतिक परिस्थितियों के कारण मध्य एशिया में अस्थिरता बढ़ने पर अनेक विद्वानों ने दिल्ली जैसे सुरक्षित क्षेत्रों की ओर रुख किया। इससे दिल्ली की सांस्कृतिक विविधता और बौद्धिक गतिविधियों में वृद्धि हुई।

इल्तुतमिश नेशिक्षा एवं विद्या के विकासको भी संरक्षण प्रदान किया। मदरसों की स्थापना तथा विद्वानों को संरक्षण देने से इस्लामी शिक्षा का विस्तार हुआ। फारसी भाषा प्रशासन और उच्च वर्ग की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति की महत्वपूर्ण भाषा बनी। इससे दिल्ली सल्तनत में फारसी साहित्य और प्रशासनिक संस्कृति के विकास को बढ़ावा मिला। भारतीय और मध्य एशियाई सांस्कृतिक परंपराओं के संपर्क ने आगे चलकर भारतीय-इस्लामी संस्कृति के विकास की आधारभूमि तैयार की।

स्थापत्य कलाके क्षेत्र में भी इल्तुतमिश का योगदान महत्वपूर्ण था। उसके शासनकाल में दिल्ली और उसके आसपास कई निर्माण गतिविधियाँ हुईं। उसने कुतुब परिसर के विकास को आगे बढ़ाया तथा कुतुब मीनार के निर्माण को पूरा कराया। उसके शासनकाल में निर्मितसुल्तान गढ़ी का मकबराप्रारम्भिक इंडो-इस्लामिक स्थापत्य के महत्वपूर्ण उदाहरणों में माना जाता है। इन निर्माणों में भारतीय शिल्प परंपराओं और मध्य एशियाई-इस्लामी स्थापत्य तत्वों का समन्वय दिखाई देता है।

इल्तुतमिश के समय में स्थापत्य केवल धार्मिक उद्देश्य तक सीमित नहीं था, बल्कि यह राजनीतिक शक्ति और शाही प्रतिष्ठा का प्रतीक भी था। विशाल भवनों, मस्जिदों और स्मारकों के निर्माण के माध्यम से सुल्तान अपनी सत्ता और वैधता को सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित करता था। इस दृष्टि से इल्तुतमिश के स्थापत्य संरक्षण को राजनीतिक और सांस्कृतिक दोनों संदर्भों में देखा जा सकता है।

निष्कर्ष

मध्यकालीन भारत के इतिहास में सुल्तान शम्सुद्दीन इल्तुतमिश का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उसने ऐसे समय में दिल्ली सल्तनत की सत्ता संभाली जब राज्य राजनीतिक अस्थिरता, क्षेत्रीय विद्रोहों और बाहरी खतरों से प्रभावित था। अपनी सैन्य क्षमता, राजनीतिक दूरदर्शिता और प्रशासनिक कुशलता के माध्यम से उसने विभिन्न विरोधी शक्तियों को नियंत्रित किया और दिल्ली की केंद्रीय सत्ता को मजबूत बनाया। बंगाल, बिहार, राजपूताना तथा अन्य क्षेत्रों में उसकी नीतियों ने सल्तनत के राजनीतिक प्रभाव को विस्तारित एवं सुदृढ़ करने में योगदान दिया। इक्ता व्यवस्था का संगठन तथा टंका और जीतल जैसी मुद्रा व्यवस्था उसके प्रशासनिक और आर्थिक योगदान के महत्वपूर्ण उदाहरण हैं। मंगोल संकट के समय अपनाई गई उसकी सावधानीपूर्ण कूटनीति भी उसकी व्यावहारिक राजनीतिक समझ को प्रदर्शित करती है। इसके अतिरिक्त, स्थापत्य और सांस्कृतिक गतिविधियों को प्रोत्साहन देकर उसने दिल्ली को एक महत्वपूर्ण राजनीतिक एवं सांस्कृतिक केंद्र के रूप में विकसित किया। उत्तराधिकार के संदर्भ में रजिया को योग्य मानना भी उसके अपेक्षाकृत व्यावहारिक दृष्टिकोण को दर्शाता है। समग्र रूप

E-mail: editor.jslsci888@gmail.com

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

से इल्तुतमिश ने दिल्ली सल्तनत को केवल सैन्य विजय पर आधारित सत्ता से आगे बढ़ाकर एक संगठित राजनीतिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था का आधार प्रदान किया। इसलिए भारतीय मध्यकालीन इतिहास में उसका शासन दिल्ली सल्तनत के स्थायित्व और सुदृढ़ीकरण का महत्वपूर्ण चरण माना जाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. सिद्दीकीआई. एच.दिल्लीसल्तनतमेंजीवनएवंपरिस्थितियोंपरफारसी-अरबीस्रोत, मोहनलालपब्लिशर, दिल्ली; 1992।
2. ईटनआर. एम. इंडियाजइस्लामिकट्रेडिशन 711–1750, ऑक्सफोर्डयूनिवर्सिटीप्रेस, दिल्ली; 2003।
3. मिर्ज़ावहीद. अमीरखुसरोकाजीवनऔरकार्य, कलकत्ता; 1935।
4. शर्मासुनील. इन द बाज़ारऑफ़लव: अमीरखुसरोकीचयनितकविताएँ, पेंगुइनबुक्स; 2011।
5. अशरफके. एम. हिंदुस्तानकेलोगोंकाजीवनऔरपरिस्थितियाँ, कलकत्ता; 1935।
6. ग्रियर्सनजी. ए. हिंदुस्तानकाआधुनिकजनभाषासाहित्य, कलकत्ता; 1889।
7. निज़ामीके. ए. मध्यकालीनभारतकेइतिहासऔरइतिहासकार, मोहनलालपब्लिशर, दिल्ली; 1983।
8. हार्डीपीटर. मध्यकालीनभारतकेइतिहासकार, मोहनलालपब्लिशर; 1997।
9. हसनमहिबुल. मध्यकालीनभारतकेइतिहासकार, आकरबुक्स, दिल्ली; 2018।
10. ईटनरिचर्डएम. इंडियाइन द पर्शियनएज: 1000–1765, एलनलेन; 2019।
11. मेरीजे. मध्यकालीनइस्लामीसभ्यता, लंदन, रूटलेज; 2006।

-

E-mail: editor.jslsci888@gmail.com